International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-11-2021, Accepted: 12-12-2021, Published: 27-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 97-100

बाँका जिला, बिहार में श्रम उत्पादकता प्रतिरूप

प्रवेश कुमार चौधरी, संजय कुमार झा
[1] शोध छात्र, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, ति. मा. भागलपुर वि. वि. भागलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] विवि प्राचार्य सह विभागध्यक्ष, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, ति. माँ. भागलपुर वि. वि., भागलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
'उत्पादकता' किसी भी प्रदेश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन एवं जनसंख्या संसाधन के अन्तर्सम्बन्ध को परिभाषित करनें का एक आधुनिक मात्रात्मक प्राविधि है। वास्तव में किसी प्रदेश में उपलब्ध संसधानों का उपयोग–दुरूपयोग, दोहन शोषण तथा विकास वहाँ की श्रमशक्ति की कार्यक्षमता, दक्षता, योग्यता आदि बातों पर निर्भर करती है। सामान्यतया जिस प्रदेश की जनसंख्या स्वस्थ कुशल, उर्जावान एवं परिश्रमी होते है उनकी उत्पादक क्षमता अधिक होती है। परिणामतः सीमित संसाधनों में भी उनका उत्तरोत्तर विकास होता है। दूसरी ओर अकुशल, अस्वस्थ आलसी, कमजोर श्रमशक्ति वाले देश/प्रदेश पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद अविकसित एवं पिछड़े होते है। इस प्रकार श्रम उत्पादकता का अभिप्राय किसी उध्यम अथवा समाज के लागत एवं उत्पाद के मध्य का अनुपातिक संबंध होता है किसी भी समाज के जीवन स्तर के उन्नयन हेतु वहाँ उपलब्ध मानव संसाधन की उत्पादकता में उसी लागत पर वृद्धि करना आवष्यक होता है। बाँका जिला बिहार में श्रम उत्पादकता के स्तर का परिकलन कर उसका विष्लेषण करना इस शोध लेख का मुध्य उद्धेष्य है। बाँका जिले में प्रतिव्यक्ति औसत श्रम उत्पादकता 10225 रू0 है। इसका स्थैतिक वितरण बहुत ही असमान है। 18035 रू0 प्रति व्यक्ति अर्जित कर शंभुगंज जिले का प्रथम स्थान रखने वाला विकासखण्ड है जबकि चांदन 3444 रूपया प्रति व्यक्ति अर्जित कर सबसे नीचले स्थान पर है।

मूलशब्दः उत्पादकता सूचकांक श्रम उत्पादकता, जनांकिकी, कार्यशील जनसंख्या, मानव संसाधन, गुणवत्ता प्रबंधन, प्राथमिक श्रमिक।

प्रस्तावना

श्रम उत्पादकता प्रतिरूप का परिकलन किसी क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन एवं मानव संसाधन के अन्तर्सम्बन्ध को प्रदर्शित करने का एक अभिनव मात्रात्मक विधि है। वास्तव में किसी प्रदेश में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग – दुरूपयोग, दोहन – शोषण तथा विकास वहाँ की श्रमशक्ति की कार्यक्षमता, दक्षता, योग्यता आदि बातों पर निर्भर करता है। सामान्यता जिस प्रदेश की जनसंख्या स्वस्थ, कुशल, उर्जावान एवं परिश्रमी होते है उनकी उत्पादक क्षमता अधिक होती है। परिणामतः सीमित संसाधनों में भी उनका उत्तरोत्तर विकास होता है। दूसरी ओर अकुशल, अस्वस्थ, आलसी, कमजोर श्रमशक्ति वाले देश /प्रदेश पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद अविकसित एवं पिछड़े होते है। बाँका जिला बिहार का अत्यन्त पिछड़ा जिला है विभिन्न भौतिक आर्थिक सांस्कृतिक, राजनीतिक व जनांकिकीय कारणों से यहाँ का उत्पादकता स्तर 10,225 रू0 प्रति प्राथमिक श्रमिक है।

अर्थ एवं परिभाषाः–

श्रम उत्पादकता अंग्रेजी के 'Labour Productivity' का हिन्दी रूपान्तरण है, जिसकी अभिप्राय किसी भी समाज के श्रमिक अर्थात् कार्यशील जनसंख्या के द्वारा उत्पादित वस्तु अथवा मूल्य से है। यह मानव के द्वारा उत्पादित और उपयोग किये गए संसाधनों के बीच का मात्रात्मक संबंध है। यूरोपीय उत्पादकता परिषद ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है कि –
उत्पादकता मन का एक दृष्टिकोण है जिसमें प्रगति एवं निरन्तर सुधार की मानसिकता मौजूद होती है। इतना ही नहीं यह आनें वाले कल को लगातार बेहतर करने में सक्षम होने की निष्चितता को बताता है। यह बदलती परिस्थितियों के लिये आर्थिक और सामाजिक जीवन का निरन्तर अनुकूलन तथा नई तकनीकों और तरीकों को लागू करने का एक प्रयास होता है जो मानव प्रगति में विष्वास करता है।''

श्रम उत्पादकता और जीवन स्तर में सुधार के मध्य प्रत्यक्ष संबंध पाया जाता हैं। जैसे–जैसे एक अर्थव्यवस्था की श्रम उत्पादकता बढ़ती है वह समान समय में अधिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन शुरू कर देती है (दृष्टि, 2019) उत्पादकता के उपर कार्य एवं शोध हेतु भारत सरकार के द्वारा 'भारतीय राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद' की स्थापना 1958 में किया गया जो भारत सरकार के एक स्वायत्त संगठन के रूप में कार्यरत है। यह संस्था उत्पादकता के क्षेत्र में अनुसंधान के अलावा औद्योगिक, इंजीनियरिंग, कृषि व्यवसाय, आर्थिक सेवाओं, गुणवत्ता प्रबंधन आदि में परामर्श और प्रशिक्षण सेवाएँ प्रदान कर रहा है। वार्षिक रिपोट '(2013) अविकसित एवं विकासशील प्रदेशों के लिये उत्पादकता की अवधारणा का बहुत महत्व होता है दोनों हीं मामलों में संसाधन सीमित होते है जिनका उपयोग अधिकतम उत्पादन हेतु किया जाना चाहिए, अर्थात् सस्ता सुरक्षित और तेज तरीके से कार्य करने की प्रवृति होनी चाहिए। इसका उद्धेष्य संसाधन का इष्टतम उपयोग होना चाहिए जिससे न्यूनतम प्रयासों और व्यय के साथ अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके।

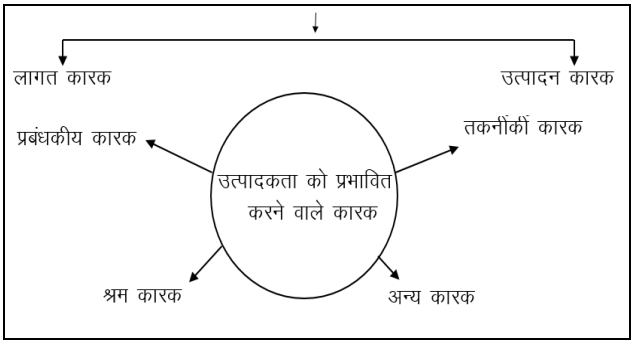

चित्र 1

अध्ययन क्षेत्र

बिहार झारखण्ड के सीमावर्ती भाग में अवस्थित बाँका बिहार राज्य का एक अत्यन्त ही पिछड़ा जिला है। वर्तमान में भागलपुर प्रमण्डल के अन्तर्गत शमिल यह जिला 21 फरवरी 1991 ई0 को भागलपुर जिले से अलग होकर स्वतंत्र अस्तित्व में आया। जिला का अक्षोषीय विस्तार 24° 30श पूरब से 25° 7श उत्तर तक तथा दशांतरीय विस्तार 86°30श पूरब से 87°12श पूरब तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 3020 वर्गकिलोमीटर है। इस जिला के उत्तर में भागलपुर, दक्षिण में देवघर गोड्डा(झारखण्ड) पूरब में गोड्डा (झारखझण्ड) तथा पष्चिम में जमुई एवं मुंगेर जिला की सीमा स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल उपावादी 20,34,763 जिसमें 10,67,140 पुरूष एवं 9,67,623 महिलाएँ है। औसत जनघनत्व 674 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। जिले की कुल आबादी का 37.9 प्रतिशत कार्यकारी है जिसमें लगभग 60 प्रतिशत कृषक मजदूर के रूप में कार्यरत है जबकि 3.46 प्रतिशत औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत है। सम्पूर्ण जिला 11 सामुदायिक विकासखण्ड में बाँटा हुआ है जिसमें दों नगर पंचायत(बाँका एवं अमरपुर) तथा 185 ग्राम पंचायत हैं। गौरवपूर्ण एवं गरिमामयी ऐतिहासिक पृष्टिभूमि वाले इस जिले का धरातल पहाड़ी–पठारी एवं मैदानी है। इसका सामान्य ढाल दक्षिण से उत्तर एवं पष्चिम से पूरब की ओर है। जलवायु उपोष्ण मानसूनी प्रकार की है, जिसमें दिसम्बर – जनवरी सबसे सर्द, अप्रैल मई सर्वाधिक शुष्क एवं गर्म तथा जुलाई–अगस्त सर्वाधिक उष्णार्द्र महीना है।

आँकड़ों के श्रोत एवं विधितंत्र

यह शोध निबंध अनेक प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है प्राथमिक आँकड़े क्षेत्रीय सर्वेक्षण के माध्यम से शोधकर्ता के द्वारा संकलित किया गया है इस कार्य को पूर्ण करने हेतु अनुसूचि एवं प्रष्नावली के साथ–साथ प्रतिदर्श सर्वेक्षण नामक सांख्यकीय विधि को अपनाया गया है। इस शोधलेख में उपयोग में लाए गए मानचित्रवाली तथा जिला स्तरीय कार्यालय से प्राप्त किया गया है। इसके अतिरिक्त आवष्यक सूचनाएँ विभिन्न सरकारी कार्यालयों के वेबसाइट, अन्य अत्याधुनिक साधनों द्वारा प्राप्त की गई है। आँकड़ों का विष्लेषण एवं निदर्शन स्वच्छ एवं उपयुक्त आरेखीय पद्धति के द्वारा किया गाया है।

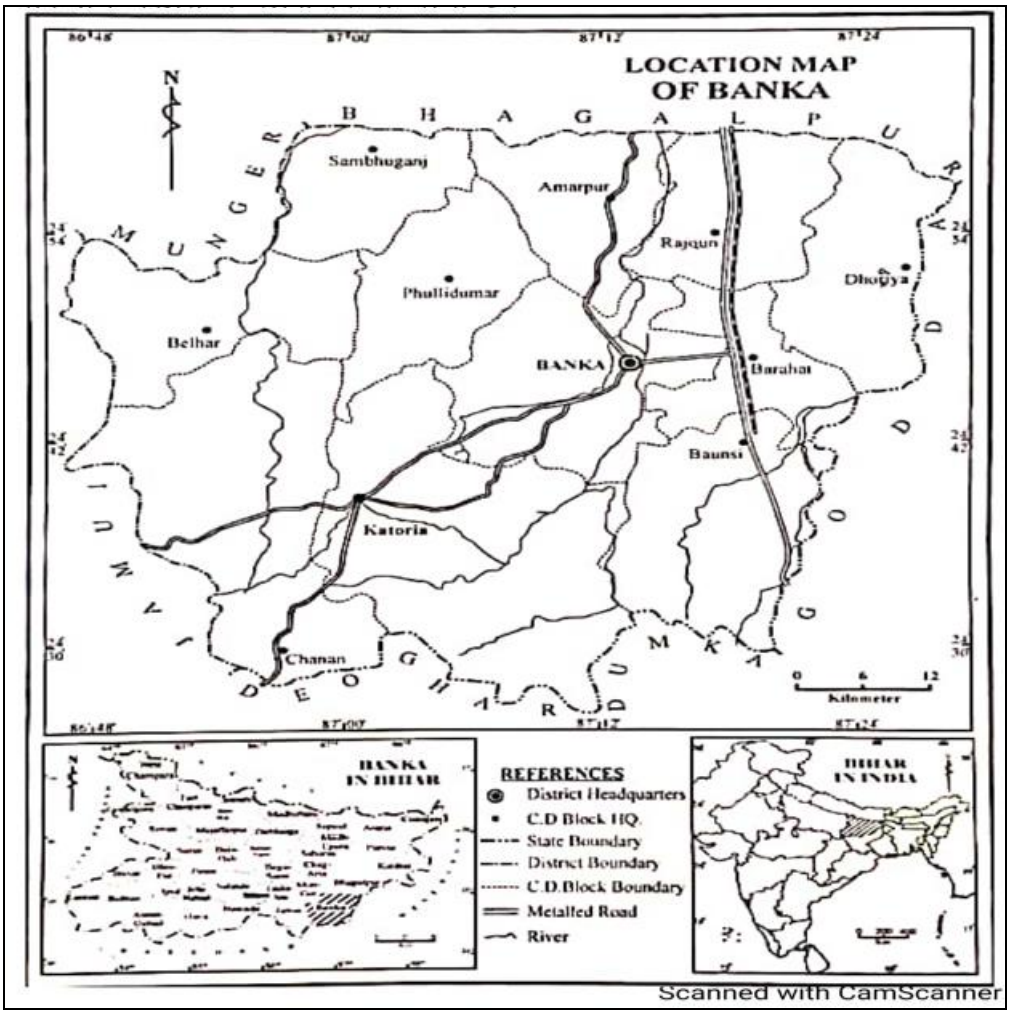

चित्र 2

श्रम उत्पादकता परिकलन की विधियाँ

वस्तुतः उत्पादकता एक गतिशील अवधारण है जो समय स्थान के साथ परिवर्तित होते रहता है इसे कृषि उत्पादकता, श्रम उत्पादकता एवं पूंजी उत्पादकता के रूप में परिकलित किया जाता है(हुसैन 2018)। उत्पादकता के परिकलन हेतु अनेक विधियाँ अपनायी जाती है, यथा प्रति इकाई क्षेत्र उत्पादन में प्रति इकाई कृषिश्रम में निवेश–निर्गत अनुपात (खुसरों 1964) कृषीय उत्पादकता अनाज तुल्यांक के रूप में (बक 1967), श्रेणी गुणांक पद्धति(कैंडल 1939, स्टांप 1960) भूमि की पोषण क्षमता (स्टांप 1958) क्षेत्र तथा फसल के आधार पर उत्पादकता सूचकांक का निर्धारण (इनैडी 1964) (सफी 1972), कुल उत्पादन को रूपया के रूप में परिवर्तित कर हुसैन 1976, शुद्ध आय का मूल्यांकन, शस्य भूमि से प्राप्त प्रतिहेक्टेयर रूपयों में(जसवीर सिंह 1976) तथा कृषि व्यवसाय के आय का मुल्यांकन, कृषि भूमि से प्रति हेक्टेयर

प्राप्त मूल्यों या कृषि श्रमिक बल से प्रति श्रमिक प्रति इकाई में (तिवारी, राय तथा श्रीवास्तव 1997) आदि मुख्य है।

अध्ययन क्षेत्र बाँका एक ग्रामीण जनसंख्या प्रधान (96.5:) जिला है यहाँ की कुल कार्यशील जनसंख्या का तीन चौथाई से अधिक (82.04:) जनसंख्या प्राथमिक क्रियाकलाप में संलग्न है। अतः इस शोध प्रबंध में कृषि से प्राप्त कुल उत्पादन का बाजार मूल्य के अनुसार वार्षिक आय में कुल प्राथमिक श्रमिकों से विभाजित कर श्रम की उत्पादकता परिकलित की गई है–

$$\text{कृषि और उससे संबंधित क्रियाओं से श्रम उत्पादकता} = \frac{\text{प्राप्त कुल आय}}{\text{प्राथमिक क्रियाकलाप में संलग्न कुल श्रमिक}}$$

$$\text{बाँका जिले की श्रम उत्पादकता} = \frac{6493179600 \text{ रू0}}{635054}$$

= 10225 रू0 प्रति प्राथमिक श्रमिक प्रतिवर्ष

बाँका जिले में श्रम उत्पादकता का स्तर

तलिका संख्या 1 के अनुसार बाँका जिले में औसत श्रम उत्पादकता 10,225 रूपये प्रतिवर्ष प्रति प्राथमिक श्रमिक है, किन्तु विभिन्न भौतिक, आर्थिक, सामाजिक राजनैतिक एवं जनांकिकीय कारणों से श्रम उत्पादकता के वितरण में अत्यधिक अन्तर देखने को मिलती है। 18035 रूपये प्रति प्राथमिक श्रमिक प्रतिवर्ष अर्जित कर शंभुगंज जिले का सबसे समृद्ध प्रखण्ड है जबकि मात्र 3,444 रूपये प्रतिवर्ष प्रति प्राथमिक श्रमिक अर्जित कर चांदन जिले का सबसे निर्धन तहसील है। श्रम उत्पादकता के आधार पर जिले को तीन क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है

तालिका 1: बाँका जिला, बिहार में श्रम उत्पादकता का स्तर 2016–17

क्र0	श्रम उत्पादकता का स्तर(रू0 प्रतिवर्ष प्रति प्राथमिक श्रमिक)	संबंधित विकासखण्ड
1.	उच्च श्रम उत्पादकता के क्षेत्र झ 1200 रूपये	शंभुगंज, रजौन, बाराहाट एवं अमरपुर
2.	मध्यम श्रम उत्पादकता के क्षेत्र, 9000–12000 रू0	बैंसी, धोरैया, फुलीडुमर एवं बेलहर
3.	निम्न श्रम उत्पादकता के क्षेत्रढ9000 रू0	बाँका, कटोरिया एवं चान्दन
	श्रोतः जनगणना एवं अन्य श्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर लेखक द्वारा परिगणित।	

1. उच्च श्रम उत्पादकता के क्षेत्र

इस वर्ग अन्तर्गत उन प्रखण्डों को शामिल किया जाता है जिसकी श्रम उत्पादकता 12000 रू0 प्रतिवर्ष प्रति प्राथमिक श्रामिक से अधिक है।

इस वर्ग में शंभुगंज, रजौन, बाराहाट एवं अमरपुर विकासखण्ड षामिल है। वास्तव में ये सभी प्रखण्ड मैदानी क्षेत्र में अवस्थित है जहाँ भूमि पर जनसंख्या का दबाव अधिक है। यहाँ कृषि के आधारभूत सुविधाओं खासकर सिंचाई के साधनों को विकसित कर उन्नत किस्म के, उर्वरक व अन्य साधनों को अपनाते हुए कृषि उत्पादकता को बढ़ाया गया है, परिणामतः श्रम उत्पादकता तुलनात्मक रूप से इन प्रखण्डों में अधिक दर्ज की गई है। भले हीं इनकी उत्पादकता स्तर राज्य के अन्य जिलों की तुलना में कम है।

2. मध्यम श्रम उत्पादकता के क्षेत्रः

इस वर्ग के अन्तर्गत बौंसी, धोरैया फुलीडूमर एवं बेलहर तहशील सम्मिलित है यहाँ श्रम उत्पादकता स्तर प्रतिवर्ष प्रति प्राथमिक श्रमिक 9000–12000 के मध्यय है। ये सभी प्रखण्ड दक्षिणी पहाड़ी पठारी क्षेत्र तथा उत्तरी मैदानी क्षेत्र के मध्य अवस्थित है यहाँ का उत्पादकता दर अपेक्षाकृत कम होने के कारण यहाँ श्रम उत्पादकता मध्यम श्रेणी का अंकित किया जाता है।

3. निम्न श्रम उत्पादकता के क्षेत्रः

इस वर्ग के अन्तर्गत 9000 रूपये प्रतिवर्ष प्रति प्राथमिक श्रमिक से कम अर्जित करने वाले विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है।

इस वर्ग के अन्तर्गत बाँका, कटोरिया एवं चाँदन जैसे तीन प्रखण्ड आते है। स्पष्ट है कि चाँदन एवं कटोरिया पहाड़ी–पठारी एवं वनाच्छादित भूमि से युक्त प्रखण्ड है यहाँ प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादकता कम होने के कारण यहाँ श्रम उत्पादकता चार हजार रूपये प्रतिवर्ष प्रति प्राथमिक श्रमिक से कम दर्ज की गई है। बाँका विकासखण्ड में श्रम उत्पादकता कम दर्ज होने का मुख्य कारण में नगरीय प्रभाव का प्रबल होना है। वास्तव में बाँका, जिला का प्रशासनिक केन्द्र है जिस कारण नगरीय प्रभाव में वृद्धि के फलस्वरूप कृषि योग्य भूमि सिमटती जा रही है परिणामतः प्रति श्रमिक कृषि उत्पादकता के साथ श्रम उत्पादकता भी प्रभावित हो रहा है।

इस प्रकार श्रम उत्पादकता को नियंत्रित करने में धरातल की प्रकृति तथा जनांकिकीय कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका देखने को मिलती है।

चित्र 3

संदर्भ सूची

1. सिंह जसवीर (1976): An Agricultural Geography of Hariyana, Vishal Pub. Univ. Campus Kurukshetra, P - 350.
2. वार्षिक रिपोर्ट (2013): वार्षिक रिपोर्ट, राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद 2012–13

3. हुसैन, माजिद (2018): भारत का भूगोल, मैक्ग्राहिल ऐजुकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड चेन्नई।
4. दृष्टि, द विजन (2019): श्रम उत्पादकता और भारत, दृष्टि विजन, डेली अपडेट्स ऑन इंडियन इकॉनोमी, 06/11/2019
5. तिवारी एवं सिंह (2019):कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकशन्स, इलाहाबाद।